

Speech 2006 Guru Purnima

कहते हैं इस दिन व्यास जी ने अपने शिष्यों को ज्ञान देना शुरू किया था। तबसे आज तक अनादी काल से इस पवित्र भूमि में इस ज्ञान का प्रचार प्रसार हो रहा है। इसी सन्दर्भ में आप लोग पधारे हो। पूरे देश में लाखों शिष्य हैं मेरे। मैं एक शैव का चेला हूँ। गुरुदेव के कृपा से ये जो परिवर्तन आ रहा है, मैं इसमें कुछ भी नहीं कर रहा हूँ। मैं तो केवल उनके दिए। उनके आदेश की पालना करने निकला हूँ संसार में। ये दर्शन विश्व दर्शन होगा। ये बात अभी लोगों के कंठों में नीचे नहीं उतर रही है। परन्तु जो रिजल्ट मिला है, उसके बारे में पश्चिम के पास कोई उत्तर नहीं है। के वो लोग ठीक हो रहे हैं जिनको मेडिकल सायंस इन्क्युरेबल कहती है। तो ये फिलोसोफी है, जो मैं अभी आपको समझाऊँगा।

अभी अभी ... (गुरुदेव जुई को बुलाते हैं) अभी अभी ये लड़की, मेरी प्रिय शिष्या, जुई पागेदार है बॉम्बे की। इसके नेतृत्व में एक मैंने मिशन भेजा था इसराइल में। 3-4 महीने तक इन्होंने इस सिद्धयोग की वहाँ लोगों को जानकारी दी। जिससे विभिन्न प्रकार के रोग खत्म हो गए, विभिन्न प्रकार के प्रेडिकशंस होने लगे। पुरे उस अशांत एरिया में तेहेल्का मच गया। विश्व का सब से अशांत एरिया है वो। और आगे होने वाले तीसरे विश्व युद्ध में वही से स्टार्ट होगा ये अडंगा। तो इस एक छोटी सी लड़की ने हिला दिया यहूदी दर्शन को। इसके बादमें इसके नेतृत्व में कनाडा गया था पूरा मिशन। वो कनाडा के अखबारों में जब ये न्यूस छपी तो बहुत आश्चर्य किया लोगों ने। तो अब इसके नेतृत्व में ही, इस मेरी प्रिय शिष्या जुई के नेतृत्व में, अमेरिका में और मिशन्स भेजूंगा, इस दर्शन की जानकारी देने के लिए।

क्योंकि ये दर्शन जो है, मानवीय दर्शन है। ये कश्मीरी शैव सिद्धांत है। कश्मीरी शैव सिद्धांत को जाति, वर्ण, देश, राष्ट्रीयता कोई मायने नहीं रखती वो तो मनुष्य मात्र में विकास की बात करता है। तो अब ये लड़की, भारतीय दर्शन का विस्तार सम्पूर्ण विश्व में करने के लिए इसके नेतृत्व में अलग अलग मैं पहले अमेरिका -- कनाडा तो होए आये -- अब अमेरिका से स्टार्ट करूँगा मिशन। ताकि दुनिया को बताया जा सके कि वेदिक दर्शन क्या है। स्वामी विवेकानंद जी के बाद मैं कोई ऐसा आदमी नहीं गया जो इस दर्शन की जानकारी दे। बाकी लोग जो गए वो तो केवल डालर के लालच में गए। मैंने वेस्ट को कह दिया है "मुझे डालर की जरूरत नहीं है।" मैं बिल गेट्स को भी लैटर लिख

चुका हूँ, चेलेंज कर चुका हूँ, तेरे डालर ने बीमारी खत्म क्यों नहीं की? और ये हमारा एक पैसा नहीं लेके, ये दर्शन, और आपको इन रोगों से मुक्त कर देगा। उस फिलोसोफी की जानकारी देने के लिए, जानकारी के साथ-साथ उसको मूर्त रूप देने के लिए, मैंने मेरी सारी पावर जो है इस लड़की को डेलीगेट कर दी है। ये मेरी रीप्रीजेन्टेटिव होगी पूरे विश्व में। और ये ही बताएगी हिंदू दर्शन क्या है। उनको नहीं पता है हिंदू दर्शन क्या है।

वो तो केवल मेटर मेटर पर बेस्ड है। मैंने कहा, मेटर इसमें से आत्मा निकल जाये तो? मेटर और स्पिरिट दोनों जब मिलेंगे न, तो ही मुक्ति की बात होगी। तो ये एक दर्शन है, जिसको मैं अभी आपको विस्तार से समझाऊंगा।

इसके (जुई के) कारण से इसराइल से अभी २-३ पेयर, ६-७ आदमी औरतें यहाँ आ रहे हैं दीक्षा लेने के लिए। ६ तारीख को यही दीक्षा लेंगे वो। और इसके बाद में अगस्त में उनकी छुट्टी होती है। तो हजारों की संख्या में यहूदी आएँगे यहाँ दीक्षा लेने के लिए। विश्व में दो ही धर्म ऐसे हैं – हिंदू और यहूदी जो अहिंसा परमोधर्म के अंदर विश्वास करते हैं। इसी सिद्धांत पर इनका जन्म हुआ है। बाकी वेस्टर्न कल्चर तो हिंसक भेड़िये हैं। अब लड़ रहे हैं देखो ये। मंदिरों पर, मस्जिदों के लिए। तो इस लड़की ने जो मुझे बताया वो एक ज्यूस एक अलग कास्ट है। उसका मंदिर नहीं होता। उसका चर्च भी नहीं होता। उनका मंदिर एक अलग होता है उसको सिनेगोग कहते हैं, सिनेगोग। वहाँ पे टेन कमांडमेंट्स लिखे होते हैं। ये मेरेको लेके गयी चर्चगेट, बॉम्बे में। बोला गुरुजी इनका मंदिर ये है। तब मेरेको समझ में आई। फिर मैंने भेजा इसको इसराइल, दो दफे गयी है। करीब लगभग चार महीने रहकर आइ वहाँ। इसके साथ ३-४ लोग और थे जो इसके असिस्टेंट थे। अभी कनाडा गयी तो गुरु पूर्णिमा के कारण से इसे आना पड़ा वापिस। अब ये अमेरिका जाएगी। इसके साथ तो जाएगी इसकी टीम जाएगी पूरी। वो इस दर्शन की जानकारी देकर के मूर्त रूप दिलाएगी। तब मालुम होगा दुनिया को हम क्या हैं, हिंदू क्या है, हिंदुस्तान क्या है, वेदिक दर्शन क्या है। बेटा बैठ जा। (जुई को बैठने का संकेत)

तो ये आज आपने सुना है योग पर कितना हल्ला मचा हुआ है। और पुरे देश में। योग क्या है? हमारा दर्शन कहता है योग कोई शारीरिक रोग मिटाने का काम नहीं है। योग का मतलब सीधी भाषा में, आत्मा और परमात्मा का मिलन। अगर वो मिलन हो गया और आदमी ने साक्षात्कार कर लिया उस परमतत्व से तो रोग तो कही ही चले जाएंगे। तो, मैं जो बात कर रहा हूँ वो मेरे गुरुदेव का आश्रम जामसर में है, यहाँ से २७

किलोमीटर उत्तर की तरफ। उनका आदेश है, मैं तो आप लोगों की तरह गृहस्ती आदमी हूँ भाई मैं कोई महान व्यक्ति नहीं हूँ, कोई विशेष व्यक्ति नहीं हूँ। अब वो नाथ एक विशेष है इसने मेरेको ये अडंगे सौंप दिया। मैं इस लाइन का आदमी नहीं था। अब इसका आदेश है इसलिए ये काम कर रहा हूँ। मेरी एक अगरबत्ती की सीख नहीं लगी इसलिए इसमें लेने देने का कुछ नहीं होगा भाई। ये भौतिक धन से लाभ नहीं मिलने वाला है। और वेस्ट जो है मेटर पर विश्वास रखता है, धन पे विश्वास रखता है: “फंड अलोट कर दो फंड अलोट कर दो।”

तो ये एक ऐसा जरिया है, इसे कहते हैं सिद्ध योग, सिद्ध योग। बाकी योगों में तो गुरु बाहर बैठता है। और कहता है ऐसे करो ऐसे करो, ये प्राणायाम करो। इसमें गुरु अंदर बैठता है। गुरु आप सबके अंदर है। हमारे योग दर्शन के अनुसार। ये शैव दर्शन है। हमारा शैव दर्शन कहता है, जो ब्रह्माण्ड में मैं है वो सारा पिण्ड में है। जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है। तो भाई अगर सभी कुछ अंदर है तो आपको आपके अंदर से मिलेगा। बाहर से कुछ नहीं मिलेगा। मैं तो आपको अंदर वाले से परिचय करवा दूँगा, इंद्रोडकशन करवा दूँगा। अब उससे दोस्ती करना तो तुम्हारा काम है। मैं तो केवल रास्ता ही बताऊँगा। दूँगा लूँगा कुछ नहीं। देने लेने को किसी गुरु के पास कुछ भी नहीं है भाई। सही बात है।

कुछ भी कहे कोई, मैं जानता हूँ, १५ साल से इस क्षेत्र में काम कर रहा हूँ, मैं जानता हूँ कौन क्या कर रहा है। अब मुझे न कोई उनसे इरशा है न उनसे बराबरी की रेस है। मैं मेरे गुरु के आदेश की पालना कर रहा हूँ। तो ये सिद्ध योग है। सिद्ध योग का क्या है, सिद्धयोग, मतलब इसमें एक विधान होता है मंत्र दीक्षा का। मंत्र दीक्षा के बिना कोई योग सिद्ध नहीं हो सकता। पातंजली योग दर्शन का बड़ा हल्ला हो रहा है। मगर पतंजली योग दर्शन क्या है? कोई नहीं बोलता। इस देश का 99% आदमी नहीं जनता कि पातंजलि योग दर्शन क्या है ? इसलिए जैसे चल रहा है चलाए जा रहे हैं मानवीय डर।

ये योग क्या है ? इस सम्बन्ध में गोरखनाथजी ने एक जगह कहा है कलियुग के आदिगुरु मछिंदरनाथजी थे। योगेन्द्र थे वो। उनके शिष्य थे गोरखनाथजी। वो नौ नाथ आज भी अमर हैं। लोगों के लिए नहीं हैं लेकिन मेरे लिए अमर हैं। गंगाईनाथजी आज भी अमर हैं। मैं तो उनके आदेश की पालना कर रहा हूँ, कर तो वो ही रहा है। मैं इसी शहर में (बीकानेर) जाया - जन्म आदमी हूँ। यहाँ के लोग मेरे को दूसरे रूप में मैं

जानते हैं | मैं नौकरी करता था railway में | अब गंगाईनाथजी की नौकरी करता हूँ | department बदला है भाई और कोई फर्क नहीं आया | ये शैव दर्शन है, ये विश्व दर्शन होगा | ये कन्या जो है जुई पागेदार, ये बताएगी कि योग दर्शन क्या है? पूरे अमेरिका में तहलका मचाएगी, आप सुनोगे |

सिद्धयोग में मन्त्र दीक्षा का एक विधान होता है | नाम जप के बिना कोई भी योग सिद्ध नहीं होता | पातंजलि योगदर्शन के पहले पहले chapter समाधि पाद में 24 से लेकर 29 तक 5 सूत्र है | उसमें ऋषि ने कहा है कि नाम जप के बिना किसी प्रकार का योग सिद्ध हो नहीं सकता | आज बिना नाम के ही योग करवा रहे हैं | तो इसमें गुरु जो है एक आराधना का तरीका बताता है | उस आराधना के लिए मैं आपको एक मंत्र बताऊंगा | वो तो केवल बृहस्पतिवार को बताऊंगा, आज नहीं बताऊंगा | आज तो केवल दर्शन की जानकारी दूँगा | वो तो ब्रह्मस्पतिवार को ही होता है |

13 जुलाई को इजरायली, कनाडा से आ रहे हैं, वो यहीं आयेंगे | 11 लैंड होंगे और 12 को यहाँ आ जायेंगे, 13 को दीक्षा लेंगे | उससे बाद अगस्त का तो पता नहीं, सैकड़ों आवें हजारों आवें यहूदी | ये दो ही धर्म (हिन्दू, यहूदी) हैं जिनका जन्म अहिंसा परमो धर्म के सिद्धांत पर हुआ है | बाकी सब हिंसक भेडीये हैं | ईसाई धर्म को मान लो नहीं तो मुसलमान को मारेंगे | मोहम्मद साहब को मान लो नहीं तो हम ईसाइयों को मारेंगे | तो ये मार काट के अपने धर्म को मनवा रहे हैं | धर्म में हिंसा का कोई स्थान नहीं है |

तो ये पातंजली योग दर्शन है, पातंजलि ऋषि ने आठ योग के अनुष्ठान बताए हैं पातंजलि ने | यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि | मंत्र दीक्षा के बाद पहले पांच तो अपने आप चेतन हो जाते हैं | जहाँ तक धारणा ध्यान और समाधि का सवाल है - धारणा पक्की नहीं हो तो ध्यान ही स्थिर नहीं होगा | रोटी नहीं खाओगे तो भूख मिट जाएगी क्या ? (खाने से मिटेगी, बातों से नहीं) किसी को कह दिया कि हलुए में ये ये गुण है और थाली मत परोसो तो फर्क पड़ेगा क्या? तो धारणा और भोजन करने जैसा उदाहरण है | अगर आपको रिजल्ट नहीं मिलेगा तो सिद्धयोग में भरोसा नहीं होगा | आपने उससे जो प्रार्थना की वो उस तक पहुंची या नहीं पहुंची? आप बाहर उसे गलत एड्रेस पर संचर कर रहे हो वो आपके अंदर बैठा है | ईश्वर तो घट घट का वासी है | ऐसा मत समझो वो केवल मेरे शरीर में है, आप में क्यों नहीं है? वो सबमें बैठा है | मैं तो आपको उससे इंटरैक्शन करवा दूँगा, परिचय करवा दूँगा | बाकी सारी

दोस्ती आपको करनी है | तो दोस्ती का मतलब उसका नाम जपो, उसका नाम जपोगे तो आखिर तंग आकर के कहना पड़ेगा - यस कम इन | (ईश्वर) रोक नहीं सकता |

अब एक तो परिवर्तन बहुत अजीब आ रहा है जो विज्ञान के लिए चुनौती है | मेरी तस्वीर से योग होने लग गया | मूर्ति पूजकों को लोग orthodox कहते हैं | एक डॉक्टर ने मुझे जोधपुर में कहा कि गुरुजी - अगर हम आपकी बात मान ले तो orthodox कहलायेंगे | ये डॉक्टर प्रोफेसर है, head of the department है | 100 -150 डॉक्टर शिष्य हैं मेरे | मैंने कहा - मैंने तो पश्चिम को orthodox बनाना है | तो ये मेरी तस्वीर से क्यों हो रहा है?

मैं आपको थोड़ा सा explain कर दूँ | देखिये मैंने आराधना की, मजबूरी में फंस कर आराधना की | परेशानियों में फंस कर आराधना की | जैसे कैंसर एड्स वाले आते हैं परेशानी में फंसकर आते हैं मेरे पास | उसी तरह से मेरे को भी एक प्रकार का टैंसन हो गया तो आराधना कर ली | स्टार्ट गायत्री मंत्र से की | सवा लाख मन्त्रों की आहुति के साथ एक प्रयुषण पूरा किया | उसके बाद मैं वो, मैं नहीं जनता था जब आराधना की, कि गायत्री बला क्या है? तो ये फिजिकल बॉडी divine form में transform हो गयी | ये शरीर जिस ऊर्जा से बना है जिस energy से बना है वो अपने असली फॉर्म में पहुँच गयी | ये बॉडी डिवाइन फॉर्म में transform हो गयी | फिर मेरे को लोगों ने बताया कि गायत्री क्या है? ये उस दिव्य प्रकाश को अपने अंदर धारण करने की प्रार्थना है |

फिर मैंने सोचा ये ऐसा अडंगा है मंत्रों वाला | तो और मन्त्रों से खपत करते हैं | तो ये कृष्ण वाली सिद्धि हो गयी | 1969 में गायत्री सिद्धि हुई और 84 में कृष्ण वाली सिद्धि हो गयी | शरीरधारियों में कृष्ण नववें अवतार थे | अवतार थे हमारे | अब वो फिजिक्स (फिजिकल बॉडी) में आ गए | अब ये दोनों सिद्धियाँ एक ही जन्म में हो गयीं, इसलिए मेरी तस्वीर से परिवर्तन आने लग गया | मैं उनको कहता हूँ तस्वीर तो एक निर्जीव मैटर है | मेरी तस्वीर में तो प्राण नहीं है ना, जन नहीं है ना | मैं तो भला बुरा (प्रभावित) कर सकता हूँ पर वो तस्वीर क्यों कर रही है? इसका जबाब पश्चिम को देना है |

आज लाखो एड्स रोगी इस देश में मेरे वेबसाइट से तस्वीर निकल कर ध्यान कर रहे हैं और उनको योग हो रहा है | और खेचरी मुद्रा लग रही है | लगी ना तेरे को भी खेचरी मुद्रा मद्रास में? अब तस्वीर से खेचरी लग गयी | अब खेचरी क्या है बताऊँ

आपको? आपको शायद मालूम हो कि - योग में कई प्रकार की मुद्राएँ होती हैं । उसमें एक खेचरी मुद्रा होती है । उसमें जीभ पीछे खिंच के तालू में धंस जाती है और अंदर से एक रस टपकता है । उसको हमारे योगियों ने अमृत कहा है । गोरखनाथ जी ने कहा है - गगन मंडल में उन्धा कुआँ, तहाँ अमृत का वासा, सगुरा होए भरि भरि पीवे निगुरा जाये प्यासा । तो इस प्रकार अगर खेचरी मुद्रा लगती है और अमृत है तो भाई ये जन्म आखिरी जन्म है । अमर होने का मतलब क्या है? दूसरा जन्म नहीं होगा । ये आखिरी जीवन होगा । हमारा योग तो इस जन्म मरण की सायकिल से छुड़वाने का एक तरीका है, रोग मिटाने का नहीं है । पातंजलि योग दर्शन की दुहाई देने वाले केस में लो, उनको कहो कि पातंजलि योग दर्शन में 195 सूत्र हैं उसमें एक शब्द रोग के बारे में नहीं लिखा । रोग मिटता है पातंजलि योग दर्शन में, पातंजलि ऋषि ने इसके बारे में एक शब्द नहीं लिखा है क्योंकि हमारे दर्शन का उद्देश्य रोग नहीं है मोक्ष है ।

चल रहा है साहब, बहुत अच्छा business है, investment एक पैसे का नहीं है । अब मैं तुमसे entry fees लेके हजार हजार रुपये दो तब ये ज्ञान दूंगा और नहीं आएगा तो एड्स वाले को तो आना ही पड़ेगा बेचारों को, वो हजार रुपये तो देने ही पड़ेंगे । मैं बॉम्बे में था । गुजरातियों ने कहा गुरु जी पैसे के बिना पार नहीं पड़ती, ये कलियुग है तो कुछ आप फ़ीस लगा दो । मैंने कहा - राम का नाम बेचा नहीं जा सकता । तो उन्होंने कहा - entry fees लगा दो । मैंने कहा चलो तुम कहते हो तो लगाता हूँ, कितनी लगाऊँ? कहने लगे - कम से कम 1100 रुपये हो । मैंने कहा लगा दूँगा, अगले ही कार्यक्रम से लगा दूँगा । मेरे बहुत कार्यक्रम हुए बॉम्बे में, 1994 से ही वहाँ जा रहा हूँ । वहीं ये लड़की (जुई पागेदार) आई थी मेरे पास । मैंने कहा 1100 रुपये अगले टाइम से लगा दूँगा । एक बात और बता दो कि - कितना धन आ जाये कि मैं संतुष्ट हो जाऊँ? बोले जी- संतोष तो नहीं होता । भूख बढ़ती है, भूख बढ़ती है । तो मैंने कहा - खाली जेब new york जाऊंगा और उनकी नीव हिला दूँगा । ये लड़की (जुई) हिला के आई है, अभी अभी आई है ।

तो ये एक ऐसा दर्शन है जिसे सिद्धयोग कहते हैं । गुरु जो नाम बताता है उसको आपको जपना है - एक दूसरा, ध्यान । अब पूरा ही ब्रह्माण्ड अंदर है तो ध्यान कहाँ करें? तो हमारे ऋषियों ने इस शरीर को दो भागों में बांटा है मोटे तौर से नौ द्वार - आँख, कान, नाक वगैरह नीचे का हिस्सा ये माया का जगत है । और दसवाँ द्वार ये

शिव की तीसरी आँख, देखी है आपने, वो आप सबके है | वो अंदर खुलती है | जब तक ये दसवाँ स्वर नहीं खुलेगा भाई, ना योग है ना ध्यान है | फिर रोग कहाँ से मिटेगा ? ये रोग मिटने का subject नहीं है | ये दर्शन विश्व दर्शन होगा | ये मेरा challenge है | तो इस प्रकार ये एक आराधना की विधि है | इसे सिद्धयोग कहते हैं | इसमें गुरु बताता है, मंत्र दीक्षा देता है | उस मंत्र को जपोगे आप, आपकी कुण्डलिनी जाग्रत हो जायेगी | आप लोग बाहर जिस देवी को पूजते हैं, शक्ति के रूप में, राधा कह दो अंबा कह दो, दुर्गा कह दो, पार्वती कह दो, सीता कह दो | योगियों ने उसका नाम रख दिया कुण्डलिनी | वो कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने control में कर लेती है और सारी योगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती है | रामदेव बाबा वाली नहीं, वो अंदर बैठा है रामदेव बाबा आपके, वो करवाएगा | वो जगत जननी कुण्डलिनी आपको सारे योग करवाएगी | वही योग करवाएगी | उसी अंग का योग करवाएगी जो आपका प्रोपली काम नहीं कर रहा | तो इस प्रकार जो योग होगा उससे सारे शारीरिक रोग खतम हो जायेंगे | हो रहे हैं, एक के नहीं लाखों के हो रहे हैं |

तो इस प्रकार ये दर्शन जो है उसको विश्व स्तर पर फैलाने के लिए मेरी एक registered संस्था है देवस्थान विभाग के पास | उसका audit होता है | जो कुछ कर रहा हूँ उसकी जबाबदेही है govt के प्रति मेरी, देश के प्रति | अब गुरु आजकल इतने हो गए, कि पत्थर मारो, गुरु के सिर पर पड़े | मेरे को तो चेला मिला ही नहीं इस देश में, सारे ही गुरु मिले | और गुरु को गुरु नहीं मानोगे दिल से, तो result नहीं मिलेगा | इसमें पढ़े लिखे का काम नहीं है | कबीर तो बिल्कुल अंगूठा छाप था, अनपढ़ छाप था मेरी तरह | पर कहाँ का कहाँ पहुँच गया | रामानंद से भी ऊपर पहुँच गया, गुरु से भी ऊपर बढ़ गया कबीर | मगर बेचारा गुरु नहीं था | चल रही है उसके नाम से, कलियुग में तो ऐसा होता है, सभी चलती है | तो इस प्रकार इसमें नाम जप और ध्यान से होगा |

आपमें जो परिवर्तन आ रहा है जो लोग नए आये हैं, जो मैं कहूँगा ना उसपे विश्वास नहीं होगा | ये reality है मैं भी जनता हूँ | कई जगह ऐसा बोला भी लोगों ने, कि गुरुजी बोल रहे हैं कि हम देखते हैं क्या कह रहे हैं? ऐसा ही नहीं सकता, impossible है | मगर जब ध्यान करवाया, हालत खराब हो गयी सबकी | ये इंजीनियरिंग कोलेज पास में ही है, इनके होस्टल में एक पुरोहितजी मेरे शिष्य हैं, vice-principal हैं engineering college के | होस्टल में ध्यान करा दिया, तो पहले तो लड़की हंस रही

थी, vice principal हैं, बोली तो नहीं बेचारी | जब कराया ध्यान, योग होने लग गया, लोटपोट होने लग गई | एक लड़की की तो आँख खुली ही नहीं | बाद में कहने लगी - आज तक तो ऐसा नहीं हुआ है |

तो आप जो सुन रहे हो ना, मेरे अंदर जो चेतना आ गई | वो मेरी आवाज़ के साथ, मेरी नजर के साथ, रोम रोम से निकल रही है | जब तक ये शरीर रहेगा भैतिक जगत में, तब तक निकलेगी | अब अनपढ़ आदमी, दूर बैठा आदमी, कष्ट वाला आदमी कह दे जी - कि मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरे को भी लाभ हो जाये, इतना सा भी पर्याप्त भी है | हाथ जोड़ना, गिडगिडाना, पैर पकड़ना और भेंट देना कोई मायने नहीं रखता | अभी हो जायेगा क्या होता है? सब लोगों को योग होगा | ये मीडिया वाले आये हैं, अब ये कितना प्रचार करते हैं, क्या क्या कहते हैं? मैं तो नहीं कह सकता | interview भी होंगे बीमारों के, इतने लोग आये हैं, लगभग 90% तो मेरे से जुड़े किसी ना किसी बीमारी या रोग के कारण | 10% जिज्ञासु हैं |

तो इस प्रकार जो योग होता है उससे आपके शारीरिक रोग खतम हो जाते हैं | एक के नहीं, हजारों के हुए, लाखों के हुए, पूरे देश के हुए | मैंने govt को कैंसर वाली (रिपोर्ट) तो नहीं दी, अभी मैंने कैंसर को highlight ही नहीं किया था | मैंने तो एड्स, क्वयों कि छूट की बीमारी है, सारा विश्व terrorize है, तो उनको रिपोर्ट दी है, negative और positive की | अब वो उसपे (रिपोर्ट पर) बोल नहीं रही (govt) कि मरा दिया ये तो, गडबड हो गई | बिना पैसे के रोग ठीक हो गया, एड्स ठीक हो गया, तो अमेरिका वाले डालर फिर हालत खराब हो जायेगी | उन्होंने जो पहाड बना रखे हैं दवाईयों के, उनका क्या होगा? इसलिए highlight नहीं हो रहा | (सिद्धयोग) एक कारण ये है (highlight) ना होने का |

दूसरा कारण ये कि कलयुग के आदिगुरु मछिंदर नाथजी काम मुझे ये आदेश है स्पष्ट शब्दों में कि ये देश तो जनता है इस दर्शन को, तू यहाँ क्या कर रहा है? तेरा काम ही west में जाना है | इसलिए spread नहीं हो रहा मैंने जोर लगा लिया | और अब मैंने फैसला कर लिया, पिछले 6 तारीख को दीक्षा दी थी, अगली दीक्षा वेस्ट को दूँगा | यहाँ आयेंगे तो दूँगा | मेरी टीम जायेगी जुई के नेतृत्व में | हिल जायेगा वो देश | ये विकासवाद है हमारे वैदिक दर्शन का एक विकासवाद है | ये कोई जादू नहीं है | वेस्ट इसको मिरेकल कहता है मिरेकल, और भारत वाले इसको कहते हैं कि ये वंडर थैरेपी है |

हिंदुस्तान टाइम्स ने लिखा अभी, जयपुर में प्रोग्राम था, ये वंडर थैरेपी है | मैं उनको कहता हूँ कि ये कोई वंडर थैरेपी नहीं है कोई मिरकल महीन है | आदमी में होने वाला इयू विकास है, कोई जादू नहीं है | मनुष्य मात्र में होने वाला (विकास)। बॉम्बे में तो कोई मेरे बहुत ज्यादा मुस्लिम शिष्य हैं | ये अभी मेरे को जुई की मदर ने बताया कि एक तो हज कर आया | अगर मेरा प्रतिबंध होता तो क्यों हज कर आया ? वो तो टेस्ट होता है, HIV positive टेस्ट आते ही | नहीं धुसने देते वो (govt), वो तो हज जाके आ गया | ये एक विकास है हमारे दर्शन का | तो जो योग होगा उससे सारे शारीरिक रोग खतम |

आज सारे विश्व में 80 बीमारी मानसिक तनाव से सम्बन्धित हैं | mental tension से रिलेटेड हैं | और कलियुग का बड़ा तामसिक वातावरण (सब जगह) इसमें गरीब हो चाहे अमीर हो मानसिक तनाव तो रहता ही है | मानसिक तनाव को शांत करना मेडिकल के बस की बात नहीं है | वो नशे की दवाई दे देते हैं | नशा जब तक रहता है तनाव खतम | ज्यों ही नशा उतरा वो तनाव वैसा, वो रोग वैसा | नशा तो हम भी करवाते हैं, हम मैटर का नहीं राम के नाम का नशा करवाते हैं | हम भगवान के नाम का नशा करवाते हैं | ईश्वर के नाम में नशा है | नहीं आया वो भी फैक्ट है, मगर आ रहा है ये भी सच्चाई है | एक समय के गुरु नानकदेवजी ने बोला है - भांग धतूरा नानका उतर जाये परभात, नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात | ये ही कबीरदास बोलते हैं | नाम अमल उतरे ना भाई, और अमल छिन छिन चढ़ उतरे, नाम अमल दिन बढे सवाया |

तो मैं जो दीक्षा देता हूँ, राधा और कृष्ण के मंत्र की दीक्षा है | कृष्ण नवें और पूर्ण अवतार थे | एक और होना है कल्कि अवतार | अब लोग कह रहे हैं कि हो गया कि नहीं हो गया, वो तो विश्व स्तर पर माना जायेगा तो वो ही होगा अवतार | तो उसको नाम का नशा कहते हैं | भगवान कृष्ण ने इसको आनंद कहा है आनंद, गीता में | गीता में 5 श्लोक हैं (इस बारे में) पांचवें अध्याय में एक श्लोक है 15वा, छठे अध्याय में चार श्लोक हैं 15, 21, 27, 28 उसमें भगवान ने इसको बताया है ये आनंद है, ये दिव्य आनंद है, ये इन्द्रियातीत आनंद है | ईश्वर ध्यानजनित आनंद है | जब तक ये आनंद नहीं आता, मनुष्य ये आनंद और सुख में भेद नहीं कर पाता | कार है बेटे पोते बंगला धन है, जी आनंद है | उनमें एक आइटम में गडबड हो गयी तो आनंद खतम | अक्षय कहाँ हुआ फिर वो? अब ये बच्ची बैठी है छोटी, ये अपना खेल खेल रही है | मेरी वाली बात में इसको

आनंद ही नहीं आ रहा | जब ये 20-25 साल की हो जायेगी तब फिर इसको किसी और बात में आनंद आएगा | जब मेरे जैसी 60-70-80 की हो जायेगी फिर किसी और बात में आनंद आएगा | वो तो इन्द्रियों से अनुभव किया जाने वाला सुख दुःख है | आनंद नहीं है | आनंद अक्षय है, वो अक्षय होता है, वो क्षय नहीं होता | नाम अमल दिन बड़े सवाया | तो इस प्रकार जो नाम देता हूँ उससे आनंद आता रहता है | उससे तनाव खतम हो जाता है | रात और दिन वो आनंद बना रहता है | तनाव के बिना वो सारे रोग खतम हो जाते हैं | बिना किसी दवाई के | इससे ये मीटर वाले डाक्टर बड़े परेशान हैं | मैंने उनको कहा - तुम केवल मीटर को पकड़ के मत बैठो | इसके साथ स्पिरिट को प्लस कर दो | मीटर प्लस स्पिरिट फिर कोई रोग नहीं रहेगा | मगर वो स्पिरिट को नहीं मानते, ये अप्लाइड साइंस में हैं |

अमेरिका से एक लड़का आया था उसके फादर ने बताया था कि अमेरिका में ७०% फेमिली में एक को कैंसर है | तो मैंने कहा कि तुम्हारा विज्ञान क्या कहता है ? तो कहा कि जिसको कैंसर हुआ वो मरेगा | तो ठीक क्यों नहीं हुआ ? तो मैंने कहा कि ये है क्या ? तो उन्होंने बताया कि कुछ ऐसे विजातीय तत्व पैदा हो जाते हैं | एक डाक्टर आर।के। चौधरी आया था मेरे पास ८-९ साल पहले, यहीं का है वो | बीकानेर होस्पिटल में था | आजकल अजमेर होस्पिटल में सुपरिंटेंडेंट है, मैंने कहा डॉक्टर क्यों नहीं इलाज होता है? तो कहने लगा गुरुजी पता ही नहीं है कारण क्या है कैंसर का? हम कीमोथेरेपी देते हैं तो RBC, WBC WBC दोनों मरते हैं, RBC RBC मर गए तो फिर ब्लड देते हैं | इस तरह से करते करते ज्यादा से ज्यादा ट्रीटमेंट देते हैं तो ६ साल से ज्यादा जिन्दा नहीं रहेगा | अमेरिका के फ्लोरिडा स्टेट से I.K. Kim नाम का अमेरिकन आया था, मैंने उससे पूछा - तो कहने लगा कि हर ६ वीक में कीमोथेरेपी देनी पड़ती है | मैंने कहा कि नहीं दोगे तो? मर जाएगा | अच्छा देते जाओ तो ६ साल जी सकता है ज्यादा से ज्यादा | मगर ६ साल तो काम धंधा करेगा | तो कहा बेड से नहीं उठेगा, हॉस्पिटल में रहेगा | तो मैंने कहा - उसको ६ वीक में ही मरने दो क्यों ६ साल तंग करते हो? मतलब क्यों मार रहे हो उसको | अब यहाँ जब कई केसेज उसने देखे | यहाँ डॉक्टर Dr P. Puniya कैंसर हेड और कॉलेज प्रिंसिपल है, उनका एक केस ठीक हो गया | उसको १४ महीने हो गए, बाइमेर का है, उस लड़के को १४ महीने हो गए, नहीं मरा | यहाँ तो ६ वीक में मर जाता, ये क्या बात हुई?

तो यह हमारा दर्शन है जो मूर्त रूप ले रहा है, ये कोई मिरेकिल नहीं है। मुझे गुरु का आदेश है इसको बाँटना है, फ्री ऑफ चार्ज बाँटना है। भाई अब पात्र यों (सीधा) रखोगे तो दूँगा, यों (उल्टा) रखोगे तो किसमें डालूँगा? ये तो मुफ्त में मिलने वाला ज्ञान है। पर इसके लिए एक शर्त है, समर्पण गुरु के प्रति। गुरु केवल समर्पण चाहता है और कुछ नहीं चाहता। मैं बताऊँ मैंने तो गंगाईनाथजी महाराज को अगरबत्ती की एक सींक तक नहीं दी। और जबरदस्ती चेप गया ये दुःख मेरे को, और कहा देख बेटा – आगे तू जाने तेरा काम जाने। तू ७ साल पहले रिटायरमेंट ले प्री-मैच्योर। और तब से ये काम कर रहा हूँ। १९८६ से लगातार, १९८६ से। ये लाभ मिल रहा है। मगर नाथ योगियों का आदेश है, “तेरा वर्किंग वेस्ट है।” इसलिए मैंने वेस्ट में भेजा मेरी इस चेली (जुई) को, और इस लड़की ने तहलका मचा दिया। और अब भेजूँगा पूरे अमेरिका में भेजूँगा। ७०% फेमिली में कैंसर है। मगर ठीक तभी होगा जब वो मुझे गुरु मानेगे।

यहाँ एक यहूदी औरत आई थी, इसी जगह दीक्षा ली थी, १६ जनवरी २००३ तब मेरे को समझ में आया कि ये दर्शन क्या है। मैं तो हिन्दू हूँ भाई, शैव हूँ, ये कश्मीरी शैव सिद्धांत को मूर्त रूप दे रहा हूँ। और मैं कहाँ दे रहा हूँ, गंगाईनाथ जी दे रहा है। मेरे को आगे कर दिया इसने, मैं तो इसका माइक हूँ, बोलता तो वो है। तो ये परिवर्तन जो आ रहा है। मेरी आवाज जो आ रही है आपके कानों में, जो सुन रहे हो, आप नहीं समझ पा रहे हो आपके अंदर कोन चीज़ एंटर हो रही है। ये प्रक्टिकल रिजल्ट बता रहा हूँ। लोग स्टार्टिंग में कहते थे... “गुरुजी बोल रहे थे, हम सोच रहे थे ये बात क्या कह रहे हैं? ऐसा हो ही नहीं सकता। आज तक नहीं हुआ।” मैंने उनको कहा – बिलकुल नहीं हुआ। आज तक नहीं हुआ, विकासवाद जो पहले हो गया, जो दुबारा होगा उसको विकासवाद नहीं कह सकते। ये विकास जो हो रहा है, एक फिजिकल बॉडी में जो हो गया... उससे आगे का अनुभव हो, आगे की बात कुछ समझ में आये, तो विकासवाद है, नहीं तो विकासवाद काहे का?

तो अब मैं आपको ध्यान करवाऊँगा तब आपको समझ में आएगा कि अंदर वाले ने आपको कब्जे में कर लिया है और योग होगा आपको, रोक लेना हिम्मत है तो। वो तो स्वामी जी जो करवाते हैं ना, मैं नहीं करवाऊँगा। आपके अंदर वाला, मेरी बात जो गले में नीचे उतरवा रहा है, रोम-रोम में जा रही है मेरी आवाज़, वो करवाएगी। आप नहीं रोक सकोगे। हिम्मत है तो रोक लेना, अभी फैसला हो जायेगा।

तो इस प्रकार जो योग होता है उससे शारीरिक रोग खतम, और नाम का जो नशा आता है उससे मानसिक रोग खतम । अब नशा भी छूट जाता है । नशा आदमी नहीं छोड़ता, वो नशा आदमी को छोड़ जाता है । अभी-अभी दो इजरायल से फोन आये मेरे पास, उन्होंने कहा – गुरुजी, हम तो सारे मीट खाने वाले और शराब पीने वाले, तो उसकी तो बदबू आ रही है, हम तो मीट-शराब नहीं खा सकते । फोन आया था मेरे पास और बड़ी खुशी की बात है, आपको आश्चर्य होगा, इजरायल जैसे देश में कम से कम २०-२५ हजार स्त्री-पुरुष हिंदी बोलते हैं । वो सारे महाराष्ट्र से गए हुए हैं, मेरे लिए एक बड़ा बेनिफिट है कि मेरे से हिंदी में बात कर लेते हैं । नहीं तो वहाँ की भाषा हिब्रू है ।

वो नशा क्यों छूटता है? मतलब ये वृत्ति बदलती है । पूरी श्रष्टि की उत्पत्ति त्रिगुणमय माया से हुई है । त्रिगुणमय माया से सृष्टि की उत्पत्ति हुई । रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण । आपके शरीर में जो वृत्ति प्रधान है वो अंदर मांगेगी, वो सप्लाई करना पड़ेगा । तामसिक टेंडेंसी है आपमें तो वो मीट-शराब और ये तामसिक चीजें, खानपान हैं जो, उसका खानपान मांगेगी । और आपने सप्लाई नहीं की तो परेशानी पैदा हो जायेगी । अफीम चूँकि जो २० साल से खा रहा है, नहीं दिया अफीम तो वो मर जायेगा ५-७ दिन में । मगर इसमें (सिद्धयोग) में नहीं मरता क्यों कि वृत्ति बदल जाती है । पहली – पहली चोट तो तामसिक ग्लैंड्स पर होती है, वो जो मांग रही है अंदर वो मांग खत्म हो जायेगी । ये डिमांड एंड सप्लाई का सब्जेक्ट है ।

स्वामी विवेकानन्दजी अमेरिका में कहीं स्पीच कर रहे थे तो एक अमेरिकन खड़ा हुआ, बोला कि स्वामीजी क्यों फालतू में खपत कर रहे हो, हमारा और आपका सौदा नहीं पटेगा । आपके धर्म में तो पहला सिद्धांत है – शाकाहारी और मांसाहारी, हम तो सारे ही मीट-शराब खाने वाले हैं, ये कैसे पड़ेगी पार? तो स्वामीजी ने चलते ही स्पीच में कह दिया – यू नीड नॉट टू गिवअप द थिंग्स, द थिंग्स विल गिव यू अप । मतलब वो स्वामीजी ने कहा कि – आपको उन चीजों को छोड़ने की जरूरत नहीं है, वो चीजें आपको छोड़ जाएँगी । तो मैं आपको चेलेंज करता हूँ, कोई नशा करे वो आज के बाद करके बता देना । आज शाम को ही करके बता देना, वो आपको छोड़ जायेगा, वो नशा आपको छोड़ जायेगा । आप चाह करके भी नहीं कर सकोगे । इस चीज़ से सबसे ज्यादा खुश होती हैं औरतें । शाम को पी के आगया, हल्ला मचायेगा, अब क्या करें पीता है तो । ओह! वो तो बड़ी खुश होती हैं, बड़ी खुश होती हैं मेरे से । जिनके आदमी पीते हैं, नशा करते हैं, पीछा

छूट गया। तो शराब छूट जाती है, अफीम छूट जाती है। बाइमेर में कोई हजारों लोग, बाइमेर में सबसे ज्यादा अफीमची हैं। बोर्डर से आया, उधर से आ जाता है, वो तो सप्लायर है पाकिस्तान, सारे ही खाते हैं अफीम। मैंने कहा मत छोड़ना तो हजारों का छूट गया। बदबू आती है अफीम की, गिटक नहीं सकते। इसलिए तो बाइमेर से ये लोग आये हैं, ये बसें आई हैं। मैं नहीं कहता छोड़ो, मैं कहता हूँ मत छोड़ो। कितने उपदेश देते हैं, ये मत करो वो मत करो, सुनते हैं क्या? इधर से सुनते हैं उधर से निकल देते हैं। मेरी क्यों मानोगे? तो आपके मतलब की बात ये है कि मत छोड़ो। कई लोग कहते हैं कि आप चलो छूट जायेगा। मैं कहता हूँ मत छोड़ो तो वो खुश होते हैं ठीक है, ये तो सुन लेंगे डेढ़ घंटे, क्या फर्क पड़ता है? कह दिया न मत छोड़ो। मगर घर जाकर छूट जाता है। आपके भी छूट जायेगा, फैसला हो जायेगा, आज ही हो जायेगा। तो वृत्ती बदल जाती है, और वृत्ती जो मांग कर रही है वो मांग नहीं करेगी। जब डिमांड नहीं तो फिर सप्लाई क्यों? डिमांड है तो सप्लाई करनी पड़ती है ना! आपकी मांग ही नहीं है तो सप्लाई नहीं करोगे, तो परेशानी नहीं होगी। जो अंदर खा रहा था ना, वो तो है ही नहीं गायब हो गया। तो इस प्रकार शारीरिक रोग खतम, मानसिक रोग खतम और नशे छूट गए, भौतिक जीवन तो सुधर गया।

आज क्या है देखो, सब धर्मों की एक ही जैसी स्थिति है। ये धर्म की बात नहीं है, कलियुग है। भगवान कृष्ण ने कहा है ये “यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत” तब तब मैं अवतार लेता हूँ। आज ये हालत पूरे विश्व की है। परन्तु हमारा योग दर्शन कहता है- आज का मानव जो है ये युग परिवर्तन के संधि-काल से गुजर रहा है। मेरे पास कई दर्शनिक आये थे कि क्या हो गया? मैंने कहा – ऐसा हो गया, तो कहने लगे – आप तो एक ऐस आदमी हो गए कि आपको कोई फेस नहीं कर सकेगा, मैंने कहा क्या बात करते हो, नौकरी करता हूँ सीनियर सुपरिण्टेण्डेंट ही सुना देता है २-३ बातें। तो कहने लगे, वो तो हो रहा है। मगर टाइम आएगा आप नौकरी नहीं कर सकोगे, नौकरी छोड़नी पड़ेगी, छोड़ दी मैंने, तो जो मेरे में परिवर्तन आ गया, वो आप सब में आ सकता है। मैं ही ठेकेदार नहीं हूँ। जैसा मेरा सदभाव है नाथजी के प्रति, वो सदभाव मेरे प्रति होगा तो भाई, नहीं तो नहीं। ये ज्ञान तो झुक के मांगो तो मिलता है। चौथे अध्याय में अर्जुन ने प्रश्न किया कि महाराज – ये कैसे मिलता है? उसने कहा कि ये ज्ञान तो झुक के मिलेगा। तत्व ज्ञानी के पास आओ, जाओ आप झुक के दंडवत प्रणाम करते हुए सेवा-

भाव से ये प्रार्थना करो तो तुझे तत्व ज्ञान मिलेगा। तो ये एक ऐसा ज्ञान है, अच्छा मिलेगा क्या? मिलेगा कुछ नहीं। वो तो मिला मिलाया है, आप नहीं जानते हो आप क्या हो? हमारा दर्शन कहता है मनुष्य ईश्वर का स्वरूप है।

मेरे जोधपुर हाई-कोर्ट में कई शिष्य हैं जज, तो एक सम्पतराजजी शर्मा मेरे पास आये, दो-तीन जैनी आये, तो जज का दिमाग तो अलग होता है ना, मेरे को बोले गुरुजी आखिर क्या करना चाहते हो? जो कर रहे हो वो तो हम समझ रहे हैं मगर कहाँ रुकोगे? मैंने कहा जी – जज साहब, बात ऐसी है, कि हमारा दर्शन कहता है कि मनुष्य ईश्वर का स्वरूप है, और एक धर्म ऐसा है कहता है कि हम पाप की सन्तान हैं, तो मैं ये प्रूव करूँगा कि मानव पापी नहीं है, ईश्वर का स्वरूप है, जज था, आज वो सहकारिता में जज है, मेरा शिष्य है, समर्पित शिष्य है। तो उन्होंने कहा कि ये गड़बड़, झगड़ा ईसाईयों से है, मैंने कहा – क्लीयरली ईसाईयों से झगड़ा है, और सीजफायर नहीं होगा, फैसला होगा, कोनसा दर्शन सही है कोनसा गलत है? और इस दर्शन को मूर्त रूप देगी ये जूई पागेदार, यंग लड़की मेरी शिष्या, परम शिष्या, अब इसके बाद मैं बाहर भेजूँगा।

तो ये एक दर्शन है, जिसकी मैंने आपको जानकारी दी, अब ये तो इस जनम में सुधर आया, नशा छूट गया, बीमारी छूट गयी, रोग खतम हो गए, तो कहाँ से आये हो वो तो जानते हो ना, बुद्ध को पिछले ३५० जन्म मालूम थे। आगे कहाँ जा रहे हो मालूम है क्या? एक घंटा बाद क्या होगा मालूम है क्या? हमारा योग दर्शन कहाँ जा रहे हो ये बताता है। आपकी मंजिल क्या है ये बताता है? तो इसमें दो तरीके हैं, एक तो नाम-जाप दूसरा ध्यान। ध्यान में आप कैसे भी बैठ जाईये, किधर ही मुंह कर लीजिए कुछ भी बिछा लीजिये। धूल में बैठ जाईये, कुश-आसन बिछाओ और शेर की खाल बिछाओ, उसके अंदर बैठा है भगवान, जो आप में घुस जायेगा, वो तो अंदर है भाई, यहाँ मन को रोको और नहीं रुकता तो मुझे देखो, और नाम-जप चालू। नाम मैं चीज़ है इसमें, नाम चाबी, नाम-जप के बिना कुछ भी नहीं होगा। गोस्वामीजी ने कहा है “कलियुग केवल नाम आधार, सुमरि-सुमरि नर उतरे पारा” तो इस कलियुग में नाम-जप ही सारी समस्याओं के अंत कर देता है। अब जब ध्यान लग जायेगा, तो ध्यान की स्थिति में आप अनलिमिटेड पास्ट फ्यूचर को देखोगे – सुनोगे। विज्ञान बड़ा हैरान है कि ये कैसे सम्भव है? मैंने कहा कि आ जाओ। इस प्रकार आप जब ध्यान में बैठोगे तो आपको अनिश्चित काल के भूत-भविष्य की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार होगा। सेल्फ रियेलाइज़ेशन और सेल्फ

विजुअलाइजेशन होगा। जो घटना नहीं घटी पहले घट जायेगी, साल भर बाद घटनी है, आध घंटे बाद घटनी है, दस साल बाद घटनी है वो पहले दिख जायेगी, होगी आपके साथ। और जो बोला जायेगा उस वक्त वो अभी सुन लो। ये हमारा दर्शन है वैदिक दर्शन है, ये मानवीय दर्शन है। मैं इसके प्रचार के लिए पूरे विश्व में जाऊंगा। आदेश है नाथ गुरुओं का, मेरे लिए तो वो आज भी अमर हैं। आम आदमी के लिए नहीं हैं। ध्यान की स्थिति में आपको कई सिद्धों के दर्शन होंगे, आज भी हिमालय में असंख्य सन्यासी समाधिस्त हैं। आज तो ये काल्पनिक बात रही है मगर अब ये दिख रहा है।

इस प्रकार ध्यान की स्थिति में आपने कई आदमियों की मौत देख ली, इस आँख से (आज्ञाचक्र पर स्थित तीसरे नेत्र से) दिखेगी इनसे (आँखों से) नहीं दिखेगी, ये (आँखें) बंद होते ही ये (तीसरा नेत्र) खुल जाती है, फिर पूरा ब्रह्मांड दिखेगा, कोई घटना कहीं हो रही है, वो दिखेगी। ये पातंजलि योग दर्शन की दुहाई देने वाले, आप नहीं जानते, योग दर्शन क्या है? एक विभूति पाद है, तीसरा चेप्टर है। पातंजलि योग दर्शन में विभूति पाद, उसके ३३ और ३६ दो सूत्र हैं, जिसमें ऋषि ने कहा है कि – आदमी जब नाम-जप और ध्यान करता है, उसे ६ सिद्धियाँ होती हैं। उसको कहा है प्रातिभ ज्ञान। प्रातिभ ज्ञान जब प्राप्त हो जाता है तो फिर साधक जो है अनलिमिटेड पास्ट फ्यूचर, देखता सुनता है। कहीं भी छिपी हुई गुप्त चीज भी उसको दिख जाती है। व्हाइट हॉउस में चिड़िया पंख नहीं मार सकती, आप एंटर हो सकते हो उसमें, सूक्ष्म शरीर से, कोई सीक्रेसी नहीं रहेगी, ये एक सत्य है।

मगर दिक्कत ये ही है कि ये काम तो हिंदू दर्शन कर रहा है, ईसाई दर्शन नहीं कर रहा। मुस्लिम दर्शन नहीं कर रहा, वहाँ जाके झगड़ा पैदा हो जाता है। तो मुसलमानों में क्यों हो रहा है ये परिवर्तन फिर? तो ये तो मनुष्य द्वारा बनाये हुए धर्म है, हमारे देखो ना, शैव और वैष्णव में झगड़ा, और शिवालय वाला विष्णु के मंदिर के आगे से नहीं गुजरेगा। और विष्णु और शिव में कितना प्रेम था। राम ने कहा न – शिव विद्रोही मम बेरी समाना, मेरा स्वार्थ है इसमें तो ठीक है मैं गंगाई नाथ जी को पुजा रहा हूँ। पता नहीं किसको पुजायेगा किसको नहीं, वो नाथ आपके अंदर बैठा है भाई।

तो इस प्रकार आपने अकेले १०-२० आदमियों की मौत देख ली, परिचित कैसे मरे, एकसीडेंट से मरा, बीमारी से मरा, भूकम्प से मरा, दिख जायेगा, २ घंटे बाद मरा, इस तरह से कोई १०-२० दिख जाएँगे। तब आपको सोचना पड़ेगा कि एक आध दिख जाय

तो हम चमत्कार बता दें, सारे के सारे वैसे ही मर रहे हैं जैसे हमको मालूम है, तो गड़बड़ है। और कहीं ख्याल आ गया गलती से, तू कौनसा अमर रहेगा? तो ध्यान में दिख जायेगा कि आप कब जाओगे और कैसे जाओगे? आपको अपनी मौत से साक्षात्कार हो जायेगा। दुनियां मर रही है अपने क्या लेना देना? जब मैं मरूंगा तो डरूंगा। क्यों कि जीवन में जो खोटे-खरे किये आप लोगों से छिपा जाऊंगा मगर मैं अपने आप से तो नहीं छिपा सकता। अब वो सोचता है कि ये अडंगा तो कर लिया। और यमराज के यहाँ तो पाई-पाई का लेखा होता है, यहाँ तो छिप गया, पर वो कहेगा हिसाब किताब, ये करके आया है चल इधर जा, तो घबराता है। फिर प्रार्थना करता है भगवान से, हे भगवान! मैं तो नालायक था, ये गलतियाँ तो हो ही गयीं, तू तो कहते हैं दयालू है, कर दे दया, कर दे माफ, फिर नहीं करूंगा, बड़ा सीरियस हो जाता है मौत के डर से, और वो तो दयालू है, आँख बंद करके प्रार्थना की। वो अर्जुन को चिड़िया की आँख दिखी थी, उस परमसत्ता के अलावा किसी को देखना ही नहीं चाहता, और वो आपके अंदर यहाँ बैठा है, पलक उलटते ही वो सामने आ जायेगा। तो इस जीने मरने के चक्कर से छूट जाओगे।

मैं रोग खतम करने नहीं आया हूँ, मैं संसार को कहता हूँ, मेडिकल साइंस मुझसे परेशान इसलिए है कि ये मेटर को इग्नोर करके, केवल स्पिरिट से कर रहा है। मैंने कहा उनको केवल स्पिरिट से नहीं, मेटर से भी कर रहा हूँ। तुम मेटर में विश्वास करते हो इसलिए मुझे मेटर से करना पड़ गया। ये तस्वीर क्यों कर रही है? ये तो निर्जीव मेटर है ना मेरी। गंगाईनाथजी का ध्यान कर लो मेरा कर लो बात एक ही है। ये निर्जीव मेटर स्पिरिट को क्यों चेतन कर रहा है? स्पिरिट ने तो फायदा किया ही किया है इस मेटर ने फायदा किया, तुम मेटर में विश्वास करते हो, कम ऑन।

तो आने शुरू हो गए। कनाडा से एक आदमी आ रहा है। वो दिल्ली है, कनाडा वाले को फोन किया कि ये प्रोग्राम वहाँ हो रहा है, आ जाओ। रोग क्या है मुझे नहीं मालूम, आएगा। और उनके कोई रोग नहीं है इजरायल वालों के। उनको तो इसी ज्ञान की भूख है। वो लोग भी आ रहे हैं। यहाँ लाखों आयेंगे वो लोग। रुपये के सामने डॉलर झुकेगा। मैंने बिल गेट्स को मैसेज दिया था। कि श्री मान जी ये डॉलर देके जा रहे हो, पहले एक तो लिखा के ले आओ अपनी सरकार से लिखा के, हमने तो डॉलर कि ताकत से एड्स खतम कर दी। अब आपकी मदद करते हैं तो हम वेलकम करते हैं। और नहीं तो ले आ कितने भी एड्स रोगी, लाख, दो लाख, दस लाख, एक पैसा नहीं लूँगा, मगर रुपये के

सामने डॉलर को झुकना पड़ेगा। ये ज्ञान तो झुकने से मिलता है, मैं इस चेलेंज को पूरा करने के लिए ही अमेरिका जाऊंगा। इस ज्ञान का दान करने के लिए अमेरिका जाऊंगा। डॉलर के लिए अमेरिका नहीं जाऊंगा। ये मैंने आपको एक दर्शन कि जानकारी दी भाई।

और ये होगा, स्वामी विवेकानन्दजी कि भविष्यवाणी है, ... अरविन्द कि भी भविष्यवाणी है: आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी, डिवाइन फॉर्म में ये फिजिकल बॉडी बदल जायेगी। अब विज्ञान के कंठों में अटक गयी। उसीका उत्तर दे सकते थे मगर एड्स खतम हो रहा है, कैंसर खतम हो रहा है, हेपेटाइटिस बी खतम हो रहा है। उस डाक्टर को मैंने कहा, जो आजकल अजमेर है, मैंने कहा डाक्टर साहब फिर हमारी बात भी सुन लो, कैंसर नहीं खतम हो रहा? और हमारे यहाँ क्यों हो रहा है? हमारा योग दर्शन कहता है कि देव और दानव अंदर हैं। तो दानव जब प्रभावी हो गया, उसने मारना शुरू कर दिया, आप उसको कैंसर कह दो, एड्स कह दो, हेपेटाइटिस बी कह दो, कुछ भी कह दो, मगर देवता भी तो अंदर बैठा है जिसमें दानव प्रभावी हो गया जिसको कैंसर हो गया, एड्स हो गया, हेपेटाइटिस हो गया। बाहर तो है नहीं कुछ। मैंने कहा किसी विधि से उसमें यदि देवता चेतन हो जाये, वो तो पावरफुल होता है दानव से, और कह दे इस शैतान का कहना मत मान तो क्या होगा? तो उसने कहा फिर तो कैंसर क्यों हो जाना चाहिए। मैंने कहा – आसानी से नहीं मानोगे, मैं भी जानता हूँ। उसके बाद मैं एक बोहरा जी आ गए। बॉम्बे से जोधपुर में, आज भी वो जिन्दा बैठे हैं। उनको हेपेटाइटिस बी और ब्लड कैंसर दोनों। तो बॉम्बे से यहाँ आ गए जोधपुर में अरविन्द माथुर के पास गए। अरविन्द मेरा चेला है, दीक्षित शिष्य है। तो उसने कहा – बॉम्बे चला जा, कहा – वहाँ से आ रहा हूँ। मैंने तो सारा फ्लैट बेच दिया, सारा सामान बिक गया, मेरे पास तो कुछ है नहीं लेने देने को, बॉम्बे में तो पैसे बिना बात ही नहीं होती। वो मेरे प्रोग्राम में आ गया और २०-२२ दिन बाद रिजल्ट नेगटिव आ गया। आज भी जिन्दा है।

ब्लड कैंसर, हेपेटाइटिस बी खतम क्यों हो गया? अब फिर लोगों ने कहा कि खतम हो गया, तो उन्होंने कहा जी – नेगटिव लाओ, मैंने पोजिटिव दिखा दी कि ये देखो इसको ये था ये है न। कि है, हाँ है। इसकी नेगटिव लाओ। मैंने वहाँ भेजा बॉम्बे में मेसेज। बोहरा जी इसकी एक अभी की रिपोर्ट करवा कर भेज दो मेरे पास। मैं इन डॉक्टर्स को देना चाहता हूँ। उसने कहा – गुरुजी मेरे पास तो पैसे नहीं हैं। ५००० रुपये लगते हैं इस टेस्ट के, आप भिजवा दो। मैं रिपोर्ट भिजवा दूँगा। मैं तेरे को करोड़पति लगा! तो आज

तक नहीं हुई नेगटिव | आज भी जिन्दा है देख लो | जोधपुर में आया है | जोधपुर वाले सारे जानते हैं उसको, और उसने भी कहा है जयपुर में जाके कि मैं जिन्दा क्यों हूँ? तुम इसका जबाब दो?

तो ये एक अपना दर्शन है जो मूर्त रूप ले रहा है, ये कोई मिराकल नहीं है, कोई जादू नहीं है | हमारा ऋग्वेद कहता है मनुष्य के शरीर की रचना ७ प्रकार के शैल से होती है | फिर वो अलग अलग शैल्स की व्याख्या करता है, पहले मेटर से शुरू करता है, कि इस शरीर की रचना कैसे हुई? तो कहता है अन्न से हुई, पहला अन्नमय कोष, फिर प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष | फिर आनंदमाय कोष, चित्तमय कोष, सत्तमय कोष | तो विज्ञानमय कोष तक तो खूब चेतन कर दिया वेस्ट ने | मगर विज्ञान समस्या का समाधान क्यों नहीं करता?

यहाँ एक बीकानेर में डॉक्टर है | डॉक्टर अब्दुल अजीज सुलेमान, गोल्ड मेडलिस्ट डॉक्टर | जब उसने देखा हेमोफिलिया ठीक हो गया, तो उन्होंने कहा कि ये तो नोबल प्राइज का केस है | मैंने कहा कितने नोबल प्राइज दिए, सरे मिल के एक केस ठीक कर दो | सरे नोबल प्राइज लेने वालों को इक्ठ्ठा कर दो और ये एक कैंसर केस ठीक कर दें | एक एड्स केस ठीक कर दें | प्राइज इसमें कहाँ से इन्वोल्व होता है? मैं तो प्राइज देने वाला हूँ लेने वाला नहीं हूँ | मुझे तुम्हारे नोबल प्राइज की जरूरत नहीं है | मगर हीमोफिलिया क्योरेबल है | दो केस ठीक हो गए, अब एक वहाँ अडंगा और हो गया, जो फेक्टर, ९ और ८, दो फेक्टर होते हैं, जो फेक्टर बदले हैं ना, उसके हिसाब से तो उस लड़के को जीने का अधिकार नहीं है, मर जाना चाहिए, जबकि वो पूर्ण स्वस्थ है, लोग कहते हैं कि आपने तो थ्योरी ही बदल दी | मैंने कहा – थ्योरी गलत ही तुमने बनाई थी | थ्योरी गलत थी | अब विज्ञान कहता है, हमारी थ्योरी ही उल्ट गयी है, तो अब ये आनंदमाय कोष चेतन हो गया, जहाँ से मैं बोल रहा हूँ | यहाँ याज्ञवल्क्य नाम के एक ऋषि हुए थे, नाम सुना होगा आपने, याद कर लेना, वो आनंद तक तो पहुंच गए थे मगर चित्त और सत् तक नहीं पहुंचे | अब वो चित्त और सत् तक भी पहुंच रहे हैं | मैंने प्राइमिनिस्टर को ३ लेटर लिखी थी | और मैंने कहा कि, मैंने तो एक तरीका वो अपनाया है जिससे दानव पर देव की विजय होगी | ये किसी जाति से रिलेटेड मामला नहीं है | ये दानव को मारेगी देव को चेतन करेगी |

इस सम्बन्ध में अरविन्द ने कहा है, अरविन्द ने एक भविष्यवाणी की, “कि इस देश का उद्धार दो मंत्र करेंगे, दो मंत्र से इस देश का उद्धार होगा,” पहला तो अरविन्द ने कहा जी वो तो प्रकट हो गया, १९०६ में वन्देमातरम | वंदेमातरम आज भी वन्देमातरम का गान नहीं कर सकते इस देश में, अपनी मातृभूमि के लिए कुछ नहीं कर सकते | पूजा नहीं कर सकते | और दूसरे के लिए कहा है कि दूसरा मंत्र अभी दूसरे के लिए कहा है संजीवनी मंत्र, संजीवनी का मतलब होता है, हनुमानजी लाए थे ना संजीवनी बूटी, तो लक्ष्मण मरा नहीं था, बेहोश हो गया था | तो जो मर गया वो तो जिन्दा नहीं होगा, मगर अभी प्राण है और वो मंत्र जपने लग गया तो नहीं मरेगा | इसीलिए कैंसर और एड्स वाले नहीं मर रहे | मगर उसने कहा है वो सीक्रेट है, मिस्टिक है, परन्तु “यट टू रिवील | नोट यट रिवील |” वो मंत्र अब रिवील होने लग गया | उसको कहा है योगियोंने कृष्ण का नाम आपको मुक्ति देगा | मैं राधा और कृष्ण के मंत्र की दीक्षा देता हूँ |

महर्षि अरविन्द ने जो भविष्यवाणी की है उसको मूर्त रूप दे रहा हूँ | कोई नई बात नहीं कह रहा हूँ | कोई नया धर्म नहीं चला रहा हूँ, कोई नया ज्ञान नहीं दे रहा हूँ | ये ज्ञान तो पहले से ही इस देश में था, कलियुग के कारण से, तामसिक शक्तियों के कारण से | ...ये इस्लाम, इसाई आये, इन्होंने ने हमारे धर्म का बेडा गर्क कर दिया, ग्रन्थ जला दिए, अच्छे अच्छे पंडितों को खतम कर दिया | आज उनकी (हमारी) हालत है तो कैंसर ठीक क्यों नहीं करते? एड्स ठीक क्यों नहीं करते? वहाँ आके चुप हैं | यहाँ आई थी इजरायल की वो ५४ साल कि औरत रोजी नेओर, उसने मुझे अंत में कहा था “गुरुजी, ड्रग माफिया आपका विरोध करेगा |” और आज वो अमेरिकन ड्रग माफिया हमारे देश में इस ज्ञान को फेलाने नहीं दे रहे, दबाव है, सरकार दबी हुई है डॉलर से | इसलिए नहीं बोल रही है, तो जयपुर तो चला गया, और इस बी जे पी सरकार के लोगों ने मेरे पे, अब कैसे रोके? मैं तो मुफ्त दे रहा हूँ दीक्षा, तो दोष क्या लगावे? छोरों ने लगा दिए पोस्टर, तो शहर को गंदा कर दिया पोस्टर लगा कर तुमने, ४० हजार रुपये जुर्माना करो | मैंने भरा है ४० हजार रुपया, राजस्थान गोरमेट के खजाने में, मैं छोड़ के प्रोग्राम बीच में ही आ गया, फिर वो वसुंधरा को लोगों ने बताया कि ये अडंगा क्या कर दिया आपने? तब उसने पूछा, फिर पुलिस के एस पी को भेजा, गुरुजी बाकी के तीनों प्रोग्राम दुबारा, ५ प्रोग्राम थे, मैं दो कर के आ गया, कहा करदो, मैंने कहा – अब नहीं करूँगा | तुमने तो नहीं सुना अब दिल्ली वालों से बात करूँगा | तो दिल्ली वालों से भी बात करूँगा, सरदार

जी क्या बोलते हैं वो उनकी बात है। पर सरदार जी बेचारे क्या करें? प्राइमिनिस्टर तो वो सोनिया जी है न! उसकी तो चलती नहीं वो तो, उसके कंधे पे तो बंदूक है। पीछे से चलाती तो वो है।

तो ये हमारा दर्शन है भाई, वैदिक दर्शन है, जिसे आज हिंदू दर्शन कहते हैं। हमारे दर्शन में दो, शैव सिद्धांत में दो सिरे निकलते हैं – एक लोग वेदान्ती और दूसरे योगी। योग ने जो रिजल्ट दे दिया उन्होंने जिस सूत्र को लिपिबद्ध कर दिया वेदान्ती उनको पढ़कर सुना रहे हैं आपको। वो तो लिपिबद्ध किया हुआ ज्ञान है योग गायब हो गया। अब योग विश्वमंडल में, सरफेस पर प्रकट हो गया। तो भाई कैंसर एड्स मिटाना है तो डॉक्टर को यहाँ आना पड़ेगा। और नहीं तो बैठे रहो तुम्हारा बड़ा है, हम कह देंगे ठीक है बड़ा हो। तो ये एक तरीका है भाई, आज गुरु पूर्णिमा है, मेरे शिष्य एक परसेंट ही आये होंगे, बहुत दूर दूर से आ रहे हैं बेचारे। बेंगलोर से आये हैं, पता नहीं कहाँ-कहाँ से आये हैं। अब मैं भी हाथ खड़ा कराऊ तो शायद लगभग सभी हाथ खड़े हो जायेंगे। उससे क्या हो जायेगा भाई? आप सब जानते हो ना मैं क्या हूँ? मेरी किताब तो खुली है। ओपन है। यहाँ तो ईसाई भी दीक्षा लेते हैं मुस्लिम भी दीक्षा लेते हैं बोद्ध भी और अब यहूदी भी आ रहे हैं। तो ये मैंने इस दर्शन की सूक्ष्म में जानकारी दी। क्यों कि अब आपका टाइम हो जायेगा, बहुत देर हो गई है, तो अब मैं ध्यान करा देता हूँ, तो यहाँ मुझे देखो। ये क्या परिवर्तन, परिवर्तन आने से कैसा होगा? तो मेरी आवाज़ तो अंदर चली गई ना, अब वो अंदर तो सब चेतन हो गया, पर दिमाग की दृष्टि से आप समझ नहीं पा रहे हो कि आपके अंदर क्या हो गया? वो अब पता लगेगा कि ध्यान में जब योग होगा आपको, घबराईयेगा नहीं।

२० मिनट ध्यान करवाउंगा। इसलिए कि ये आये हुए हैं ना, ये मीडिया वाले आये हुए हैं, अब इसको कैसे हाईलाइट करते हैं, कौन करने देता है कौन नहीं करने देता है। मुझे तो कोई फर्क नहीं पड़ता। अखबार वालों को तो मैंने कह दिया था। अखबार वालों ने कहा कि हमसे कॉन्टेक्ट में रहो, मैंने कहा – क्या करोगे? बोले कि – छापेंगे, कर्पूरचंद कुलिश की बात बता रहा हूँ जो गुजर गए बेचारे। उनका बेटा गुलाब कोठारी मेरे पास डेढ़ घंटे बैठ कर गया था जयपुर में। मैं कहता हूँ ऐसा करता हूँ – मैं कहता हूँ ऐसा कर दूँगा। मैं धन से operate नहीं होऊँगा, मैं धर्म से संचालित हूँ, तुम लोग धन से संचालित हो, पर सौदा पटा नहीं, मैंने कहा तू चला जा कुछ भी नहीं दे तेरे को, जो पहले कर

दिया उस पे बोल। उसने कहा जो आगे करोगे उसपे बोलूँगा, मैं बोला – मैं तेरे को नहीं दूँगा, चला गया। फिर जाते हुए मैंने कहा देख – तेरा अखबार दिन १२ बजे तक रद्दी में बिकता है और मैं जीते-जागते अखबार छाप रहा हूँ। जो २० साल, २५ साल, ३० साल तक प्रचार करेगा। तो तेरे अखबार की कितनी कीमत है भाई? पौने तीन रूपया, रद्दी में बिकेगा वो चवन्नी में, मुझे तेरे प्रचार की जरूरत नहीं है, साफ़ कहा उसको।

तो ये एक विधान है भाई। पंकजजी गोस्वामी प्रोफेसर हैं सायंस के, ये उसको विधा शब्द देते हैं। ये एक विधा है उसको ये समझ नहीं पा रहे गुरुजी। ये तो मानवीय दर्शन है, अभी बोले थे आपके सामने। इंगर कॉलेज में हेड ऑफ़ दी डिपार्टमेंट हैं साइंस के, उनकी वाइफ़ भी हैं। ये अभी जो ओझाजी आये, उनके मकान में मैं रहता हूँ, बिना किराए, पानी-बिजली का भी वोई देते हैं। क्यों कि है ही नहीं मेरे पास। तो बिना धन के मैं चल रहा हूँ, आज तक नहीं रुका, मैं अमेरिका खाली जेब जाऊँगा। और उनको साफ़ कहूँगा, स्वामी विवेकानन्दजी ने एक बात कही, बड़ी अजीब बात, उन्होंने कहा जी – कलियुग में दान ही धर्म है। अब दान क्या है? रोटी-कपडा दान नहीं है। तब स्वामीजी ने कहा कि – सबसे उत्तम दान आध्यात्मिक ज्ञान का दान है। फिर विद्या दान, और तीसरा प्राण दान, तो मैंने सोचा, क्यों मुफ़्त का दानी बनना? तो मैं तो भईया दान करने जाऊँगा, लेने नहीं जाऊँगा। और वहाँ बसूँगा थोड़ी, मैं तो मेरे यहीं रहूँगा जिस जगह पैदा हुआ। हाँ अगर इसको लेना है तो डॉलर को यहाँ आना पड़ेगा। आप देखोगे देर नहीं लगेगी। इस साल का एंड नहीं होगा, लाखों इधर मैं बता दूँगा आपको। तो अब आप २० मिनट ध्यान कर लो।

ये लोग फिल्माएंगे, अच्छा फिर जो-जो बीमार हैं, जो ठीक हुए हैं बीमारी से, जितने भी ठीक हुए हैं अलग-अलग, मतलब वो एक बंगाल से भी आया है वो डाक्टर है, डेंटल सर्जन। एड्स रोगी था वहाँ उसने कहा जी बीकानेर में ठीक हो रहे हैं, तो जो ट्रीटमेंट कर रहे थे नाराज़ हो गए, गुस्सा हो गए। पागल हो, दुनिया ठीक नहीं कर पा रही। आज उसने कहा गुरुजी अब तो मैं क्यों टेस्ट कराऊँ, फालतू पैसे लगाऊँ? मेरे तो कोई रोग ही नहीं है। तो इसे आदमियों का आप अगर इंटरव्यू लेना चाहो तो ध्यान के बाद आप इंटरव्यू लेना शुरू कर देना। अब आगे आपका जो मीडिया का मालिक है, सेठ है वो इजाजत देगा तब तो आप दिखा सकोगे नहीं तो नहीं दिखा सकोगे। मेरा आज तक का अनुभव बताता है ये सेठ मेरे से परेशान हैं। इसलिए मुझे नहीं लगता कि हाईलाइट कर

सकेंगे, और कर देंगे तो बहुत खुशी कि बात । और तो ये धर्म का काम है । अगर ये हाईलाइट कर दे तो मानव जाति की सबसे अच्छी सेवा है । बाकी भैया मैंने तो आपको कह दिया मैं तो मेरा काम जीवन भर करूँगा । तो अब आप ध्यान करो और ध्यान में जो योगिक मूवमेंट हों उनको फिल्मा लो । फिर जिनसे इंटरव्यू लेना है वो लेलो । फिर आगे आपका मालिक आपका सेठ जैसा कहे वैसा करो । अब करो देखो २० मिनट ध्यान करो । आराम से आँख बंद करलो और यहाँ मुझे देखो ।

तो दीक्षित शिष्य तो नाम जपेंगे, और कोई नहीं दीक्षित है तो गुरु-गुरु करो । २० मिनट आँख बंद करके बैठो । कोई भी योगिक मूवमेंट हो तो घबरना नहीं, वो २० मिनट बाद अपने आप बंद हो जायेगा । चलो करो ध्यान शुरू करो ।